ISSN: 2582-5526 www.thevoiceofcreativeresearch.com
The Voice of Creative Research
Vol. 7 & Issue 3 (July 2025)

OPEN ACCESS PEER REVIEW

https://doi.org/10.53032/tvcr/2025.v7n3.17

गुट निरपेक्ष आन्दोलन में भारत की भूमिका

India's Role in the Non-Aligned Movement

डॉ. निधि गुप्ता
अतिथि विद्वान
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

Abstract
The Non-Aligned Movement (NAM) is an international organization of nations that declared they would not align themselves with any power bloc or enter into military conflicts. After the Second World War, the world was divided into two rival camps: the Socialist Bloc and the Capitalist Bloc. On the other hand, newly independent Asian and African nations were beginning to assert their sovereignty. These nations did not trust the supremacy of the two superpowers and believed that their "Third Force" could provide balance, resist domination, and contribute constructively to international cooperation. Among the chief architects of the Non-Aligned Movement, the special contribution of India's Prime Minister Jawaharlal Nehru, along with Yugoslav President Tito and Egyptian President Nasser, is noteworthy. By strengthening the foundation of this "Third Force," they ensured the steady expansion of NAM membership. Countries like China, which believed in militarism and communism, were considered adversarial to NAM. Meanwhile, Pakistan actively sought to join military blocs.

सारांश–
गुट निरपेक्ष राष्ट्रो की एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था है जिन्होने यह निश्चय किया है कि वे किसी भी पावर ब्लाक के साथ या विरोध में नही है। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् संसार दो विरोधी गुटो (सोवियत संघ व अमरीकी गुट) में विभाजित हो चुका था। दूसरी तरफ एशिया अफ्रीका के राष्ट्रो का स्वतंत्र अस्तित्व उमरने लगा था, ऐशिया के अधिकॉस राष्ट्र पं. देशो की भॉति गुटबन्द्वी पर विश्वास नही करते थे उनका मानना था कि उनके प्रदेश 'तीसरी शक्ति' हो सकते है जो गुटो के विभाजन को अधिक जटिल सन्तुलन में परिगण करके अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग में सहायक हो सकते है। गुट निरपेक्षता आन्दोलन के प्रणेताओं में स्व पं. जवाहर लाल नेहरू का विशेष योगदान था साथ ही मिश्र के राष्ट्रपति नासिर' तथा यूगोस्लोविया के मार्शल टीटो ने तीसरी शक्ति की धारणा को मजबूत बनाया फलस्वरूप गुट निरपेक्ष राष्ट्रो की संख्या में निरन्तर वृद्धि होती गयी। चीन जैसा देश जो सैनिकवाद व साम्राज्यवाद में विश्वास रखता है उसे भी स्वयं को गुट निरपेक्ष देश कहलाना पसन्द था इतना ही नही पाकिस्तान गुट निरपेक्ष देशो के अधिवेशनो

ISSN: 2582-5526 www.thevoiceofcreativeresearch.com
The Voice of Creative Research
Vol. 7 & Issue 3 (July 2025)

में भाग लेने के लिये प्रयासरत था। गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का स्वरूप उत्तरोन्तर व्यापक रूप ग्रहण करता गया।

Keywords: Non-Aligned Movement (NAM), Socialist Bloc, Capitalist Bloc, International cooperation (गुट निरपेक्ष आंदोलन, समाजवादी गुट, पूँजीवादी गुट, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग)

गुट निरपेक्षता का अर्थ

गुट निरपेक्षता का अर्थ है विभिन्न राजनीतिक सैनिक गुटो से तटस्थ या अलग रहना अपनी स्वतत्रंता और राष्ट्रीय हित के अनुसार गुट निरपेक्षता की परिभाषा निम्नलिखित है :–

An Ambassador Sppeaks के अनुसार गुट निरपेक्षता का अर्थ है– अपनी स्वतंत्र रीति – नीति । गुटो से अलग रहने से हर प्रश्न के औचित्य अनौचित्य को देखा जा सकता है। एक गुट के साथ मिलकर उचित–अनुचित का विचार किये बिना ऑख मूँदकर पीछे चलना गुटनिरपेक्षता नही है।

पं. जवाहर लाल नेहरू के शब्दों में – गुट निरपेक्षता का अर्थ है सैनिक गुटो से अपने आपको अलग रखने का किसी देश द्वारा प्रयत्न करना, इसका अर्थ है जहॉ तक हो सके, तथ्यो को सैनिक दृष्टि से न देखना चाहे कभी –2 ऐसा करना भी पड़ता है परन्तु हमारा स्वतंत्र दृष्टिकोण होना चाहिये तथा सारे देशो के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बध होने चाहिये।

एम.एस.राजन के अनुसार–गुट निरपेक्षता का अर्थ है सैनिक या राजनीतिक गठबन्धनों की अस्वीकृति सकारात्मक रूप से इसका अर्थ है, अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर जैसे भी तथा जब भी यह सामने आये प्रत्येक मामले के लाभो के अनुरूप ही तदर्थ निर्णय लेना।

मार्शल टीटो के अनुसार– गुट निरपेक्षता की नीति साम्राज्यवाद उपनिवेशवाद नस्लवाद और अन्य सभी प्रकार के विदेशी प्रभुत्व व शोषण का विरोध करती है और सत्ता राजनीतिक, सामाजिक तथा अर्थिक प्रभुत्ववार और वाहरी हस्तक्षेप के विरूद्ध है।

इन परिभाषाओ के आधार पर यह कहा जा सकता कि गुट–निरपेक्षता का अर्थ है किसी भी देश के साथ सैनिक गुटबन्द्वी में शामिल न होना हर प्रकार का आक्रमक सन्धि से दूर रहना शीतयुद्ध से अपने को पृथक रखना तथा राष्ट्र हित का ध्यान रखते हुऐ न्यायोचित पद्धति से अपनी विदेश नीति का संचालन करना।

कोई भी देश अकेला विकास नही कर सकता चाहे वह कितना ही विशाल व शक्तिशाली भलें ही हो ऐसी स्थिति में विकास व विश्व की अवधारणा को सफल बनाने के लिये राष्ट्रों के मध्य सहयोग शांति व अंहिसा आवश्यक है। इसलिये इस नव स्वतंत्र देशो ने अपने आप को उपनिवेशवाद ओर साम्राज्यवाद के प्रभाव से मुक्त रहकर साथ ही शीत युद्ध में शक्ति संघर्षो में शामिल होने से वचने के लिये गुट–निरपेक्षता को अपनी विदेश नीति का हिस्सा वनाया भारत गुट निरपेक्ष देशों में प्रथम है जिसने गुट–निरपेक्षता को सकारात्मक रूप प्रदान किया गुट निरपेक्ष देशो में प्रमुख स्थान होने के कारण विश्व राजनीति के क्षितिज पर भारत की आवाज के महत्व को स्वीकार किया जाने लगा।

गुट–निरपेक्षता की वढ़ती हुई लोकप्रियता का प्रमाण हमें गुटनिरपेक्ष देशों के शिखर सम्मेलन से मिलता है।

क्र.स.	शिखर सम्मेलन	स्थान	वर्ष	सदस्य संख्या
1	पहला	वेलग्रेड	1–6 सितम्बर 1981	25
2	दूसरा	कहिरा	5–10 सितम्बर 1984	47
3	तीसरी	लुसाका	8–10 सितम्बर 1970	53
4	चौथा	अल्जीयर्स	8–9 सितम्बर 1973	75
5	पॉचवॉ	कोलम्बो	16–19 सितम्बर 1973	85
6	छटवॉ	हवाना	3–0 सितम्बर 1973	92
7	सातवॉ	नई दिल्ली	7–12 मार्च 1973	100
8	आठवॉ	हरारे	1–6 सितम्बर 1973	101
9	नवमॉ	बेलग्रेड	4–7 सितम्बर 1973	102
10	दशमॉ	जकाती	1–7 सितम्बर 1973	108
11	ग्यारहवॉ	काटी जेना	18–20 सितम्बर 1973	113
12	बारहवॉ	डर्लन	2–3 सितम्बर 1973	114
13	तेरहवॉ	क्वालालम्पुर	20–25 फरवरी 1973	116
14	चौदहवॉ	हवाना	11–16 जुलाई 1973	118
15	पन्द्रहवॉ	शर्म–अल–शेख	11–16 जुलाई 1973	118
16	सोलहवॉ	तेहरान	26–31 अगस्त 1973	120
17	सत्रहवॉ	वेनेजुएला	13–18 सितम्बर 1973	120
18	अठारहवॉ	अजरवैज्ञान	25–26 अक्टूबर 1973	120
19	उन्नीसवॉ	युगाड़ा	19–20 जनवरी 1973	120

गुट निरपेक्ष राष्ट्रों ने अपने शिखर सम्मेलनों द्वारा विश्व राजनीति की विभिन्न समस्याओं पर गंभीर रूप से विचार विमर्श किया और उनके समाधान के लिये कई महत्वपूर्ण सुझाव दिये।

भारत की विदेश नीति के रूप में गुट निरपेक्षता

भारत की विदेश नीति सदैव ही विश्व शान्ति की समर्थक रही है भारत में प्रारंभ से ही यह महसूस किया कि युद्ध तथा संघर्ष नवोदित भारत के आर्थिक व राजनीतिक विकास को अवरूद्ध करने वाला है।

शान्तिवादी नीति की घोषणा करते हुए पं. जवाहरलाल नेहरू ने कहा था हमारी पहली नीति, यह है –

कि हम युद्ध जैसे भीषण आपत्ति को घटित होने से रोकें।

दूसरी नीति – इससे वचने की होनी चाहिये।

तीसरी नीति – यदि युद्ध छिड़ जाये तो हम उसे रोकने में समर्थ हो सकें।

अतः अन्तर्राष्ट्रीय विवादों को निपटाने के लिये भारत शान्तिमय साधनों, द्विपक्षीय, त्रिपक्षीय वर्ताओं व समझौते मध्यस्था, पंच निर्णय आदि पर बल देता है।

अतः गुट निरपेक्षता भी एक प्रकार से सक्रिय तथा स्वतंत्र सिद्धान्त है इस नीति के अनुसार, स्वतंत्र राष्ट्रों से मित्रतापूर्ण संबंध स्थापित किये जा सकते हैं और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में वैधानिक सक्रिय

भूमिका अदा की जा सकती है। यह एक ऐसी नीति के जो विभिन्न देशों के मध्य सेतु का निर्माण करती है और पूर्ण निर्मित सम्बन्धों के अस्तित्व को कोई हानि नहीं पहुंचाती है।

9 दिसम्बर 1958 को लोकसभा में पं. जवाहर लाल नेहरू ने कहा था, यह एक नकारात्मक नीति नहीं है यह एक सकारात्मक नीति है, यह केवल अपने सर्वोत्तम निर्णय के अनुसार काम करने तथा जिनमें हम विश्वास करते हैं उन सिद्धान्तों को आगे बढ़ने की नीति है।

गुटनिरपेक्षता का सिद्धान्त एक गत्यात्मक विदेश नीति है जिसके सकारात्मक पहलू निम्नलिखित हैं :–

(i) विश्व शान्ति हेतु कार्य करना।

(ii) विश्व में स्वतंत्रता के प्रसार को बढ़ाना।

(iii) उपनिवेशवाद की समाप्ति एवं स्वतंत्र राष्ट्रों के उदय का समर्थन करना।

(iv) राष्ट्रों के मध्य सहयोग के दायरे में विकास करना।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि गुटनिरपेक्षता से भारत का क्या अभिप्राय है किन्तु फिर भी कुछ विशेषज्ञों में मतभेद है। शायद इसलिये कई लेखक इसे अलगाववाद गैर सम्बद्धता, तटस्थता, एकलवाद आदि धारणाओं से जोड़ते हैं। परन्तु पं. जवाहर लाल नेहरू ने इन धारणाओं को गुटनिरपेक्षता की नीति के सामने मानने को गलत ठहराया है।

अधिकांश व्यक्ति गुटनिरपेक्षता का तात्पर्य तटस्थता समझ लेते हैं यह गलत है क्योंकि ''तटस्थता'' एक ऐसी स्थिति है जो केवल उसी समय होती है जब किन्हीं राज्यों में युद्ध चल रहा है। मिश्र के राष्ट्रपति नासिर के शब्दों में ''तटस्थता शब्द का निर्माण केवल यद्ध के समय के लिये हुआ है हम नैतिक रूप तटस्थ नहीं है लेकिन हम गुटनिरपेक्ष हैं इसलिये हम प्रत्येक अन्तर्राष्ट्रीय समस्या का न्याय उनके गुणों के आधार पर करते हैं, न कि गुटवाद के आधार पर।

पं. जवाहर लाल नेहरू ने यह भी कहा कि गुटनिरपेक्षता का तात्पर्य यह कदापि नहीं कि हम चुप रहेंगे जहॉ भी अन्याय होगा, स्वतंत्रता को खतरा होगा या किसी पर आक्रमण किया जायेगा हम उसका विरोध करेंगे न कि हम तटस्थ रहेंगे।

अतः निरपेक्षता का अर्थ है, बिना किसी के साथ पूरी तरह बंधे हुए, अपनी स्वतंत्र नीति का पालन किया जाये।

इस प्रकार हम इस नीति के आधार पर शान्ति के पक्ष में सही निर्णय होने में सक्षम होंगे। आर्थिक व अन्य क्षेत्रों में सहयोग बढ़ा सकेंगे और आपसी सहयोग के आधार पर हम अपनी विदेश नीति के प्रमुख उद्देश्य ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की धारणा को साकार कर पायेंगे।

भारत ने बांग्लादेश को पाकिस्तान से मुक्त कराने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की वह भारत की गुटनिरपेक्षता नीति का एक सजीव उदाहरण है इसके माध्यम से भारत ने यह प्रमाणित कर दिया कि गुटनिरपेक्षता की नीति अव्यवहारिक नहीं है।

पं. जवाहरलाल नेहरू गुटनिरपेक्षता के सिद्धान्त के महान समर्थक थे। उन्होंने इसके विस्तार व विकास के लिये हर संभव प्रयास किये।

वे एशिया व अफ्रीका जैसे विकासशील देशों को युद्ध की विभीषिका से बचाना चाहते थे इसके लिये नीति को व्यापक संदर्भ में शान्ति की नीति मानते थे।

निष्कर्ष

इस प्रकार गुटनिरपेक्षता का मूल उद्देश्य न केवल तीसरी दुनिया के देशों को सैनिक गठबन्धनों से बचाना था बल्कि उन्हें एक स्वतंत्र विदेश नीति की प्रेरणा देना था इसके बढ़ते हुए महत्व को देखते हुए इस बात से नकारा नहीं जा सकता कि तीसरी दुनिया में इसकी विश्वसनीयता बढ़ती गयी और विकासशील देशों का महत्वपूर्ण आंदोलन बन गया और उसने विकासशील देशों के प्रमुख मुद्दों को विश्व मंच पर उभारा और उनके लिये संघर्ष किया। इस प्रकार यह स्पष्ट है, गुट निरपेक्षता की नीति तीसरी दुनिया के लिये एक सशक्त आन्दोलन बन गयी और भारत इस आन्दोलन के माध्यम से वैश्विक शान्ति स्थापित करने का प्रयास करता रहा इसीलिये गुटनिरपेक्षता की प्रकृति को अच्छी तरह समझना जरूरी हो जाता है।

सन्दर्भ सूची

1– यादव आर. एस. 'भारत की विदेश नीति' पियर्सन दिल्ली 2013
2– विश्व का इतिहास, डॉ. के.एल. खुराना, डॉ. आर.सी. शर्मा (लक्ष्मी नारायण अग्रवाल)
3– अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध डॉ. बी. एल. फड़िया, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा।
4– भारत की विदेश नीति डॉ. एस.सी. सिंघल लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।